शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

डॉ० राजेश कुमार गुप्ता
मु०-राजनगर कालोनी (गणेश आटा चक्की के पास)
पोस्ट- आरोग्य मन्दिर,
गोरखपुर-273001

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

- डॉ० राजेश कुमार गुप्ता

व्यावसायिक सफलता के प्रमुख दो कारक हैं- स्वभावानुकूल वातारण और मार्गदर्शन। उचित मार्ग दर्शन के अभाव में व्यवसाय का गलत चयन छात्र के जीवन की सफलता को प्रभावित करता है। यह शोध अध्ययन विधार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा पर परिवार और परामर्श के प्रभावों के प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेतः- विद्यार्थी, व्यावसायिक आकांक्षा पारिवारिक वातावरण, परामर्श, प्रभाव

उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार-प्रसार देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र के अनेक परिवारों के अधिकांश सदस्य अशिक्षित अथवा अल्पशिक्षित हैं। नगर-क्षेत्र में भी बहुत कम ऐसे परिवार हैं जिनके परिवार के बड़े सदस्य विशेषकर महिलाएँ स्नातक तक शिक्षा प्राप्त हैं। इसके कारण ऐसे परिवारों के बालकों और बालिकाओं को विषय वर्ग तथा व्यवसाय चयन पर उपयुक्त परामर्श नहीं मिल पाता। पहले की अपेक्षा स्नातक-पाठ्यक्रमों एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के क्षेत्र में चयन की समस्या जटिल है। अंग्रेजी, गणित, विज्ञान विषयों में अध्ययन सम्बन्धी कठिनाई का निराकरण नहीं करा पाते और उन्हें प्रमुख व्यवसाय जैसे-चिकित्सा, इंजीनियरिंग, अध्यापन, कम्प्यूटर, फार्मेसिस्ट, वकालत, चित्रकारी, संगीत, पत्रकारिता, प्रबन्धन आदि में प्रवेश के लिए किस तरह की जानकारी अपेक्षित है, इसकी भी जानकारी नहीं मिल पाती है।, साथ ही साथ विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी आदतों और शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए भी कोई परामर्श या निर्देशन नहीं मिल पाता है। इस प्रकार पारिवारिक पृष्ठभमि एवं व्यावसायिक परामर्श सेवाओं की उपलब्धि छात्रों एवं छात्राओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

परामर्श का अर्थ-

कैरियर एवं व्यावसायिक परामर्श का अर्थ विद्यार्थियों के योग्यता, क्षमता, अभिरूचि के आधार पर उनके लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों जैसे- चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, अध्यापन, सेना, बैंक, रेलवे, एन.डी.ए., एम.बी.ए. आदि के चयन तथा विभिन्न प्रकार के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता प्रदान करना है।

व्यावसायिक आकांक्षा का अर्थ-

व्यावसायिक आकांक्षा का अर्थ-बालक द्वारा व्यक्तिगत रूप से किसी व्यवसाय के प्रति रूझान है जो भविष्य में करना चाहता है। इस सन्दर्भ में व्यावसायिक आकांक्षा एक प्रकार से बालक का लक्ष्य है, जो प्राप्त करना चाहता है। विभिन्न व्यावसायों में से कुछ को वरीयता क्रम में पसन्द करने को व्यावसायिक आकांक्षा कहा जा सकता है।

शोध के विशिष्ट उद्देश्य-

(1) उच्च तथा निम्न पारिवारिक स्तर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।

(2) परामर्श के पूर्व एवं पश्चात् माध्यमिक स्तर के छात्रों और छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना-

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित परिकल्पनाएं निर्मित की गई-

(1) माध्यमिक स्तर पर छात्रों और छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई अन्तर नहीं है।

(2) निम्न एवं उच्च पारिवारिक स्तर का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(3) निर्देशन और परामर्श का विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव पड़ता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

डॉ० राजेश कुमार गुप्ता
मु०-राजनगर कालोनी (गणेश आटा चक्की के पास)
पोस्ट- आरोग्य मन्दिर,
गोरखपुर-273001

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शोध विधि- यह अध्ययन निम्नलिखित विधि के अनुसार किया गया:-

(i) मापन के उपकरण:- शोध विधि से सम्बन्धित निम्नलिखित मापन के उपकरणों की आवश्यकता पड़ी। इनके उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्ता ने इनका निर्माण स्वयं किया, जिसका विवरण अधोलिखित है -

(।) पारिवारिक वातावरण सम्बन्धी प्रश्नावली :- इस प्रश्नावली में परिवार की आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति और सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित 25 प्रश्न रखे गये।

(i) व्यावसायिक आकांक्षा सूची:- इस सूची में 100 व्यवसायों एवं कार्य क्षेत्र का नाम दिया गया है। जैसे- चिकित्सा, शिक्षण, इंजीनियरिंग, चित्रकारी, संगीत, सेना आदि। इनमें से किन्हीं तीन वांछित व्यवसायों का चयन करना था।

(ii) न्यादर्श:- इस शोध से सम्बन्धित जनसंख्या के अन्तर्गत गोरखपुर जनपद के माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत् सभी विद्यार्थी आते हैं। इनकी संख्या बहुत अधिक होने के कारण सभी से आंकड़े, एकत्रित करना संभव नहीं था। इसलिए न्यादर्श का चयन किया गया। सर्वप्रथम गोरखपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में से 5 बालकों के तथा 4 बालिकाओं के इण्टर कालेज का लॉटरी विधि से चयन किया गया। चयनित विद्यालयों में विद्यार्थियों का आकस्मिक विधि से प्रतिचयन किया गया। चयनित विद्यार्थियों की कुल संख्या 520 थी जिनमें 245 बालक तथा 275 बालिकाएँ थी।

(iii) परामर्श की विधि:- परामर्श के पूर्व प्रश्नावली/सूची का प्रशासन किया गया। उसके बाद व्यावसायिक आकांक्षा पर परामर्श देते समय विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों में जाने के लिए शैक्षिक योग्यता, प्रवेश परीक्षा, आयु सीमा, पाठ्यक्रमों की प्रकृति एवं कैरियर संभावनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी दी गयी। परामर्श के पश्चात् उसके प्रभाव को देखने के लिए पुन: मापन के उपकरणों का प्रशासन किया गया।

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय विधियाँ अपनायी गयी, जिसमें औसत, प्रमाणिक विचलन, प्रतिशतों की तुलना, माध्यों के अन्तर की मानक त्रुटि तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना की आवश्यकता पड़ी। सांख्यिकीय गणना के आधार पर बालकों एवं बालिकाओं को उच्च, माध्यम, निम्न पारिवारिक स्तर में विभाजित करके तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

आंकड़ों की व्याख्या-

(i) **विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव:**

निम्न एवं उच्च पारिवारिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा परामर्श पूर्व एवं पश्चात् व्यक्त किये गये वांछित व्यवसायों के प्रति मतों के आवृति को प्रतिशत में बदलकर सारणीबद्ध किया गया, जिनका विवरण तालिका 1.1 में प्रस्तुत है -

तालिका 1.1

विद्यार्थियों के प्रमुख व्यावसायिक आकांक्षा का परामर्श पूर्व एवं पश्चात् प्रतिशत

क्र0 सं0	प्रमुख व्यवसायों का नाम	निम्न वर्ग बालक		निम्न वर्ग बालिकाएँ		उच्च वर्ग बालक		उच्च वर्ग बालिकाएँ	
		परामर्श पूर्व	परामर्श पश्चात	परामर्श पूर्व	परामर्श पश्चात	परामर्श पूर्व	परामर्श पश्चात	परामर्श पूर्व	परामर्श पश्चात
1	टंकझा	14	24	11	17	05	05	02	02
2	इंजीनियरिंग	36	12	17	04	16	49	16	21
3	कम्प्यूटर इंजी0	12	12	07	07	05	08	04	06
4	चिकित्सा	36	12	33	11	14	46	16	50
5	बागवानी करना	02	07	02	04	05	08	04	04
6	आचार, मुरब्बे, जेली	05	10	09	20	08	08	04	04
7	शिक्षण सेवा	12	36	22	44	54	27	16	50
8	कढ़ाई, सिलाई, बुनाई	-	-	22	44	-	-	50	16
9	चित्रकारी	29	36	22	44	16	11	50	16
10	संगीत व वाद्य	19	29	22	33	05	05	13	13

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

डॉ० राजेश कुमार गुप्ता
मु०-राजनगर कालोनी (गणेश आटा चक्की के पास)
पोस्ट- आरोग्य मन्दिर,
गोरखपुर-273001

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

11	प्रशासनिक सेवा	07	05	04	02	14	40	02	06

तालिका 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परामर्श पश्चात् निम्न वर्ग के 12 प्रतिशत बालक ही इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग और चिकित्सा व्यवसाय करना चाहते है। 36 प्रतिशत निम्न वर्ग बालक परामर्श पश्चात् शिक्षक और चित्रकार बनना चाहते हैं। 24 प्रतिशत निम्न वर्ग बालक टंकण सीखकर अपना जीविकोपार्जन करना चाहते हैं। 29 प्रतिशत निम्न वर्ग बालक संगीत व वाद्ययंत्र कला को अपना कैरियर बनाना चाहते हैं। इससे स्पष्ट है कि- उनके व्यवसाय चयन पर परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रभाव सीध-सीधे पड़ रहा है। इसका कारण स्पष्ट है कि निम्न वर्ग के परिवार अधिक धन व समय व्यय होने वाले व्यवसाय का प्रशिक्षण कराने में बालकों को सहयोग और सुविधा नहीं दे सकता है।

तालिका 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परामर्श पश्चात् निम्न वर्ग की 4 प्रतिशत बालिकाएँ इंजीनियरिंग, 7 प्रतिशत कम्प्यूटर इंजीनियरिंग तथा 11 प्रतिशत बालिकाएँ ही चिकित्सा व्यवसाय में जाना चाहती हैं, क्योंकि इन व्यवसायों के प्रशिक्षण में काफी धन और समय व्यय होता है जिसे निम्न वर्ग का पारिवार वहन नहीं कर सकता है। जिन व्यवसायों के प्रशिक्षण में कम धन और समय व्यय होता है, उन व्यवसायों को अधिक निम्न वर्ग की बालिकाएँ चयन करती हैं। जैसे-44 प्रतिशत बालिकाओं ने शिक्षण, कढ़ाई, सिलाई, बुनाई, चित्रकारी, व्यवसाय, 33 प्रतिशत बालिकाओं ने संगीत व वाद्य यंत्रकला, 20 प्रतिशत बालिकाओं ने अचार, मुरब्बे, जेली बनाने का व्यवसाय तथा 17 प्रतिशत बालिकाओं ने टंकण का चयन किया है।

तालिका 1.1 के अवलोकन से पता चलता है कि परामर्श पश्चात् उच्च वर्ग के 49 प्रतिशत बालक इंजीनियरिंग, 46 प्रतिशत चिकित्सा और 40 प्रतिशत प्रशासनिक सेवा में जाना चाहते हैं। इसका कारण यह है कि इन व्यवसायों की प्रवेश परीक्षा की तैयारी एवं पांच वर्ष के प्रशिक्षण में काफी धन व्यय होता है जिसे उच्च वर्ग का परिवार वहन कर सकता है।

तालिका 1.1 के अवलोकन से पता चलता है कि परामर्श पश्चात् उच्च वर्ग की 50 प्रतिशत बालिकाएँ चिकित्सा एवं शिक्षण व्यवसाय और 21 प्रतिशत इंजीनियरिंग व्यवसाय में जाना चाहती हैं, इसका कारण यह है कि इस व्यवसाय को समाज में महिलाओं के लिए सम्मानजनक व्यवसाय के रूप में देखा जाता है तथा इन व्यवसायों के प्रशिक्षणका व्यय भी उच्च वर्ग का परिवार सरलता से वहन कर सकता है।

(ii) **विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर परामर्श का प्रभावः**

उच्च एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के कुछ-प्रमुख व्यावसायिक आकांक्षाओं का परामर्श पूर्व तथा परामर्श पश्चात् व्यक्त मतों के प्रतिशतों की तुलना एवं क्रान्तिक अनुपात को सारणीबद्ध किया गया, जिनका विवरण निम्न तालिकाओं में प्रस्तुत है-

तलिका - 1.2

क्र०	व्यवसायों का नाम	निम्न वर्ग बालक		क्रांतिक अनुपात
1.	टंकण	14	24	1.16
2.	इंजीनियरिंग	36	12	2.61*
3.	चिकित्सा	36	12	2.61**
4.	शिक्षण कार्य	12	36	2.61*
5.	संगीत व वाद्य यंत्र	19	29	1.07

*0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका 1.2 में प्रतिशत क्रान्तिक अनुपात (2.61) 0.01 स्तर पर सार्थक है। परामर्श पूर्व 36 प्रतिशत निम्न वर्ग के बालक इंजीनियरिंग और चिकित्सा व्यवसाय में जाना चाहते थे, लेकिन परामर्श पश्चात् मात्र 12 प्रतिशत बालक ही इस व्यवसाय का चयन किये। इसका कारण यह है कि अधिकांश बालक कला वर्ग से अध्ययन कर रहे थे। उन्हें परामर्श के फलस्वरूप जब पता चला कि केवल विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी ही इंजीनियरिंग एवं चिकित्सा व्यवसाय में जा सकते हैं।, तो उन्होंने परामर्श पश्चात् अपना मत परिवर्तित करते हुए शिक्षण व्यवसाय, संगीत व वादन कला और टंकण व्यवसाय के प्रति मत व्यक्त किया। कुछ

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

डॉ० राजेश कुमार गुप्ता
मु०-राजनगर कालोनी (गणेश आटा चक्की के पास)
पोस्ट- आरोग्य मन्दिर,
गोरखपुर-273001

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

बालक विज्ञान वर्ग के होते हुए भी अपनी योग्यता, क्षमता, अभिरूचि और पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए परामर्श पश्चात् अपने व्यावसायिक आकांक्षा में परिवर्तन कर लिया।

तलिका - 1.3

क्र०	व्यवसायों का नाम	निम्न वर्ग बालक		क्रांतिक अनुपात
1.	इंजीनियरिंग	17	04	2.01*
2.	चिकित्सा	33	11	2.52*
3.	शिक्षण कार्य	22	44	2.21*
4.	कढ़ाई, सिलाई, बुनाई	22	44	2.21*
5.	चित्रकारी	22	44	2.21*

*0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका 1.3 में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात 0.05 स्तर पर सार्थक है। परामर्श पूर्व 17 प्रतिशत निम्न वर्ग की बालिकाएँ इंजीनियरिंग तथा 33 प्रतिशत निम्न वर्ग की बालिकाएँ चिकित्सा सेवा में जाना चाहती थी, लेकिन परामर्श पश्चात् मात्र 4 प्रतिशत बालिकाएँ इंजीनियरिंग तथा 11 प्रतिशत बालिकाएँ ही चिकित्सा व्यवसाय में जाने के लिए मत व्यक्त किया। इसका कारण यह है कि कुछ बालिकाएँ कला वर्ग में अध्ययन करते हुए भी इंजिनियरिंग व चिकित्सा व्यवसाय का चयन किया तथा कुछ विज्ञान वर्ग की बालिकाओं की अपनी व्यक्तिगत रूचि शिक्षण कार्य, कढ़ाई, सिलाई, बुनाई, चित्रकारी में होते हुए भी अभिभावकों के रूचि के अनुसार अपनी व्यावसायिक आकांक्षा दबाव में आकर बदल लिया था। परामर्श पूर्व मात्र 22 प्रतिशत निम्न वर्ग की बालिकायें ही शिक्षण कार्य कढ़ाई, सिलाई, बुनाई और चित्रकारी में जाना चाहती थी, लेकिन परामर्श पश्चात् अपनी योग्यता, क्षमता अभिरूचि एवं पारिवारकि पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए बालिकाओं के व्यावसायिक आकांक्षा में परिवर्तन के कारण इनकी संख्या बढ़कर 44 प्रतिशत हो गयी है।

तलिका - 1.4

क्र०	व्यवसायों का नाम	निम्न वर्ग बालक		क्रांतिक अनुपात
1.	इंजीनियरिंग	16	49	3.03*
2.	चिकित्सा	14	46	3.00*
3.	शिक्षण कार्य	54	27	2.37*
4.	प्रशासनिक सेवा	14	40	2.52*

*0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

*0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका 1.4 में प्रतिशत क्रान्तिक अनुपात 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सार्थक है। परामर्श पूर्व 16 प्रतिशत इंजीनियरिंग तथा 14 प्रतिशत चिकित्सा व प्रशासनिक सेवा में आकांक्षा रखने वाले उच्च वर्ग बालकों का प्रतिशत परामर्श पश्चात् बढ़कर 49 प्रतिशत इंजीनियरिंग, 46 प्रतिशत चिकित्सा तथा 40 प्रतिशत प्रशासनिक सेवा में हो गयी। साथ ही साथ परामर्श पश्चात् शिक्षण व्यवसाय में 54 प्रतिशत आकांक्षा रखने वाले उच्च वर्ग के बालकों की संख्या घटकर 27 प्रतिशत हो गयी। इसका प्रमुख कारण यह रहा कि उच्च वर्ग के परिवार इन व्यवसायों के प्रवेश परीक्षा की तैयारी और पांच वर्षो के प्रशिक्षण में व्यय होने वाले धनराशि को बहुत सरलता से उपलब्ध करा सकते है।

तालिका - 1.5

क्र०	व्यवसायों का नाम	निम्न वर्ग बालक		क्रांतिक अनुपात
1.	चिकित्सा	16	50	3.54*
2.	शिक्षण कार्य	16	50	3.54*
3.	कढ़ाई सिलाई बुनाई	50	16	3.54*
4.	चित्रकारी	50	16	3.54*

**0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका 1.5 में प्रतिशत कान्तिक अनुपात (3.54) 0.01 स्तर पर सार्थक है। परामर्श पूर्व 16 प्रतिशत उच्च वर्ग की बालिकायें चिकित्सा व शिक्षण व्यवसाय में जाने की इच्छुक थी, लेकिन परामर्श

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

डॉ० राजेश कुमार गुप्ता
मु०-राजनगर कालोनी (गणेश आटा चक्की के पास)
पोस्ट- आरोग्य मन्दिर,
गोरखपुर-273001

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

पश्चात् इनकी संख्या बढ़कर 50 प्रतिशत हो गयी। साथ ही साथ परामर्श पूर्व 50 प्रतिशत उच्च वर्ग की बालिकायें चित्रकारी एवं सिलाई, कढ़ाई, बुनाई व्यवसाय के प्रति मत व्यक्त किया था, लेकिन परामर्श पश्चात् इनकी संख्या घटकर 16 प्रतिशत रह गयी। इसका कारण यह है कि परामर्श पूर्व जो बालिकायें चित्रकारी, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई के प्रति आकांक्षा व्यक्त किया था, लेकिन परामर्श पश्चात् अपनी योग्यता, क्षमता, अभिरूचि एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा एवं शिक्षण व्यवसाय में जाने की इच्छा व्यक्त किया।

निष्कर्ष- उक्त अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

(1) विद्यार्थी की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का बहुत प्रभाव पड़ता है। उच्च वर्ग के विद्यार्थी इंजीनियरिंग, चिकित्सा, शिक्षण और प्रशासनिक सेवा में जाना चाहते हैं। लेकिन निम्न वर्ग के विद्यार्थी टंकण, संगीत व वादन कला, चित्रकारी, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई व्यवसाय में जाना चाहते हैं।

(2) विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर परामर्श की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों ने परामर्श पूर्व व्यवसाय चयन में पारिवारिक पृष्ठभूमि, रूचि और शैक्षिक योग्यता का ध्यान नहीं दिया, लेकिन परामर्श पश्चात् उन्हीं विद्यार्थियों ने व्यवसाय चयन करते समय पारिवारिक पृष्ठभूमि, रूचि और शैक्षिक योग्यता को ध्यान में रखा।

अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर पारिवारिक पृष्ठभूमि और परामर्श का प्रभाव पड़ा है। परामर्श के पूर्व तथा परामर्श के पश्चात् निम्न और उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भः-

(i) English Medium Books

1. John, F.Fc., Gowan lyle D. Schmidt, Counselling Reading in the theory and Practice, New Yourk University, 1955, C.5
2. James F. Adams, Counselling and guidance a summery view: theory and practice, London, 1949 P.10
3. Franklin, J. Keller, Principales of vocational Educational Guidance, Boston, D.C. Health & Co, 1948, P. 325

(ii) हिन्दी माध्यम की पुस्तकें

1. जायसवाल, सीताराम, शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 1990
2. कपिल, एच0के0, अनुसंधान विधियाँ, हरी प्रसाद भार्गव प्रकाशन आगरा, 1980
3. वर्मा, आर0एस0एण्ड उपाध्याय राधाबल्लभः शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 1990

(iii) Ph.D. Thesis

1. SINHA J.C.: Role of the Family as a unit on vocational interests of the intermediate students. (Ph.D., Edu., Agra University, Agra, (1978)
2. CHADHA, S.S.: A Study of some Psychological and Social Factors as related to vocational aspirations of Rural and Urban High School Children, (Ph. D, Psy, Pandichery University, (1979)
3. NAGAR, RASHMI: A Study of comparative study of vocational Aspiration in Girls and Boys in Gorakhpur of Intermediate level.
(Ph.D.-Edu, DDU Gorakhpur, (1990)